संजीव के उपन्यासों में आदिवासी समाज के विस्थापन से उत्पन्न संकट और संघर्ष : एक अनुशीलन

विषयानुक्रमणिका

प्रथम अध्याय- 1-52

भारतीय नवजागरण : आदिवासी और विस्थापन

१.१- भारतीय नवजागरण के अन्तर्विरोध

१.२- भारतीय नवजागरण और हाशिये का समाज

१.३- विस्थापन का स्वरूप

१.४- औद्योगिक विकास और आदिवासी

द्वितीय अध्याय- 53-90

संजीव : समय से साक्षात्कार

२.१- संजीव और उनका समय

२.२- संजीव का कृतित्त्व

२.३- संजीव की उपन्यास दृष्टि का विकास

२.४- हिन्दी में आदिवासी उपन्यास : रूपरेखा

तृतीय अध्याय- 91-133

आदिवासी समाज विस्थापन और संघर्ष

३.१- आदिवासी समाज की अस्मिता का संघर्ष

३.२- आदिवासी समाज के विस्थापन की समस्या

३.३- जल, जंगल और जमीन का संकट

३.४- आदिवासी समाज में नारी

चतुर्थ अध्याय- 134-168

संजीव के उपन्यासों में विस्थापन से उत्पन्न आर्थिक और राजनीतिक संकट

४.१- विस्थापन की समस्या और संजीव के उपन्यास

४.२- जल, जंगल और जमीन का संकट और संजीव के उपन्यास

पंचम अध्याय- 169-200

संजीव के उपन्यासों में विस्थापन से उत्पन्न सामाजिक संकट

५.१- नारी समस्या

५.२- आंतरिक समस्या

५.३- आदिवासी समाज के अन्य संकट और संजीव के उपन्यास

षष्ठ अध्याय- 201-236

संजीव के उपन्यासों में विस्थापन से उत्पन्न धार्मिक और सांस्कृतिक संकट

६.१- धर्म का संकट

६.२- उत्सव और त्यौहार का संकट

६.३- आदिवासियों की भाषा पर संकट

६.४- प्रचलित कथा भाषा एवं आदिवासियों की भाषा

उपसंहार- 237-245

परिशिष्ट- 246-254

(अ) संदर्भ ग्रंथ-सूची

(ब) पत्र पत्रिकाएँ